



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी, 2026)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एन.: 3048-8656

अलसी की उन्नत खेती से आय वृद्धि: सफलता कहानी

डॉ. योगेश कुमार, *संदीप चौहान एवं डॉ. एस के पाण्डेय

कृषि विज्ञान केन्द्र, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (म.प्र.), भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: chouhankvk@igntu.ac.in

अनूपपुर जिले का पुष्पराजगढ़ विकासखंड जनजातीय बहुल एवं वर्षा आधारित कृषि प्रणाली पर आधारित क्षेत्र है, जहाँ अलसी रबी मौसम की एक प्रमुख तिलहन फसल के रूप में उगाई जाती है। अलसी न केवल पोषण एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि कम लागत में अधिक लाभ देने वाली फसल भी है। इसके बावजूद क्षेत्र में परंपरागत किस्मों के उपयोग, वैज्ञानिक तकनीकों की जानकारी के अभाव तथा संसाधनों की सीमित उपलब्धता के कारण अलसी की औसत उत्पादकता राज्य एवं राष्ट्रीय औसत से काफी कम रही है। इन चुनौतियों को दृष्टिगत रखते हुए कृषि विज्ञान केंद्र, अनूपपुर द्वारा कृषकों की आय में वृद्धि एवं तिलहन उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रबी मौसम में अलसी फसल पर संकुल अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (CFLD) का आयोजन किया गया, जिससे आधुनिक तकनीकों को प्रत्यक्ष रूप से खेत स्तर पर प्रदर्शित किया जा सके।

लाभार्थी कृषक का परिचय

नाम : श्री सोम सिंह

पिता का नाम : श्री महेश प्रसाद

ग्राम : उमरगुहान

तहसील : पुष्पराजगढ़

जिला : अनूपपुर (म.प्र.)

श्री सोम सिंह एक प्रगतिशील जनजातीय कृषक हैं, जिनके पास लगभग 4.0 हेक्टेयर कृषि भूमि है। उन्होंने 10वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की है तथा उनके परिवार में चार सदस्य हैं। वे खरीफ मौसम में धान, मक्का एवं अरहर तथा रबी मौसम में गेहूं, चना, मसूर, अलसी एवं सरसों की खेती करते हैं।

समस्या की पहचान

क्षेत्र में अलसी उत्पादन की स्थिति का आकलन करने पर यह पाया गया कि अधिकांश कृषक स्थानीय किस्मों का उपयोग कर रहे थे, जिनकी उपज क्षमता सीमित थी। इसके अतिरिक्त बीज उपचार न करना, असंतुलित उर्वरक उपयोग, खरपतवार नियंत्रण की वैज्ञानिक विधियों का अभाव तथा समन्वित फसल प्रबंधन तकनीकों की कमी प्रमुख बाधाएँ थीं। परिणामस्वरूप अलसी की औसत उपज लगभग 3.0-3.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक सीमित रह जाती थी, जिससे कृषकों को अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा था।

प्रदर्शित तकनीक

CFLD के अंतर्गत निम्नलिखित उन्नत एवं वैज्ञानिक तकनीकों का प्रदर्शन किया गया—

- अलसी की उच्च उपज देने वाली किस्म JLS-66 का चयन
- अनुशासित दर से बीज उपचार
- संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन
- खरपतवार प्रबंधन हेतु वैज्ञानिक विधियाँ
- NPK कंसोर्टिया का पर्णाय छिड़काव
- कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा अनुशासित समस्त फसल उत्पादन तकनीकों का पालन

संस्थागत सहभागिता

- आईसीएआर-अटारी, जोन-IX, जबलपुर (म.प्र.)
- कृषि विज्ञान केंद्र, अनूपपुर, आईजीएनटीयू, अमरकंटक (म.प्र.)
- किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, अनूपपुर (म.प्र.)

उपज एवं आर्थिक विश्लेषण

क्र. स.	विवरण	उपज (क्विंटल/हे.)	लागत (रु./हे.)	सकल आय (रु./हे.)	शुद्ध आय (रु./हे.)	लाभ-लागत अनुपात
1.	कृषक की पद्धति	3.2	6,200	11,264	5,064	1.80
2.	CFLD (JLS-66)	5.70	8,100	20,064	11,964	2.47
3.	% वृद्धि	138.6	33.9	138.0	329.0	78.5

किस्म JLS-66 की संभावित उपज 7.5 क्विंटल/हेक्टेयर है, जबकि जिले का औसत उत्पादन 4.6 क्विंटल/हेक्टेयर तथा राज्य औसत 5.9 क्विंटल/हेक्टेयर रहा। CFLD से प्राप्त उपज जिला एवं राज्य औसत से अधिक पाई गई।

सफलता के प्रमुख बिंदु

- संकुल अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत उन्नत किस्म JLS-66 के उपयोग से कृषक पद्धति की तुलना में लगभग 78 प्रतिशत अधिक उपज प्राप्त हुई।
- शुद्ध आय में दो गुना से अधिक वृद्धि दर्ज की गई, जिससे अलसी फसल की आर्थिक व्यवहार्यता सिद्ध हुई।
- बीज उपचार, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन एवं खरपतवार नियंत्रण जैसी वैज्ञानिक तकनीकों के समन्वित उपयोग से उत्पादन में निरंतरता एवं स्थिरता आई।
- लाभ-लागत अनुपात 1.80 से बढ़कर 2.47 हो गया, जिसने अन्य कृषकों को भी इस तकनीक को अपनाने के लिए प्रेरित किया।
- प्रदर्शन के दौरान क्षेत्र के अन्य कृषकों ने खेत दिवस एवं भ्रमण के माध्यम से तकनीक को प्रत्यक्ष रूप से देखा एवं अपनाने में रुचि दिखाई।

कृषक की प्रतिक्रिया

लाभार्थी कृषक श्री सोम सिंह ने CFLD के अंतर्गत प्रदर्शित तकनीक के प्रति पूर्ण संतोष व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि उन्नत किस्म JLS-66 एवं वैज्ञानिक फसल प्रबंधन अपनाने से अलसी की खेती अधिक लाभकारी सिद्ध हुई है। उन्होंने भविष्य में भी इस तकनीक को अपनाने तथा अन्य कृषकों को प्रेरित करने की इच्छा व्यक्त की।

निष्कर्ष एवं भविष्य की दिशा

कृषि विज्ञान केंद्र, अनूपपुर द्वारा आयोजित अलसी पर संकुल अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन से यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित हुआ कि उन्नत किस्म JLS-66 के साथ अनुशासित वैज्ञानिक उत्पादन तकनीकों को अपनाकर जनजातीय एवं वर्षा आधारित क्षेत्रों में अलसी की उत्पादकता एवं कृषक आय में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है। यह सफलता कहानी न केवल तकनीकी अंतर (Yield Gap) को कम करने में सहायक सिद्ध हुई है, बल्कि क्षेत्र में तिलहन आधारित फसल विविधीकरण एवं आत्मनिर्भर कृषि की दिशा में भी एक प्रभावी मॉडल प्रस्तुत करती है। भविष्य में यदि ऐसी तकनीकों का व्यापक स्तर पर प्रसार किया जाए, तो यह क्षेत्रीय स्तर पर तेलहन उत्पादन बढ़ाने एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

